महिलाओं की समस्याओं को हल करने के लिए लोगों की मानसिकता को बदलना होगा।

आज महिलाओं के उत्थान, नारी सुरक्षा, महिलाओं पर हो रहे बलात्कार, अत्याचार, शोषण और अन्य कई समस्याओं के बारे में चर्चा करना, प्रवचन करना एक फैशन सा बन गया है। कई कहलाने वाले **(So-called)** पुरुष या महिला नेताओ एवं समाज सेवको द्वारा महिला समस्याओं के समाधान के विषय में अनेक बड़े बड़े दावे भी किए जाते है। परंतु वास्तविकता यह है की अधिकतर ऐसे दावे खोखले साबित हुए हैं। राज्य सरकार एवं केंद्र सरकार द्वारा भी कायदा कानून द्वारा बहुत सारे प्रयास किये जा रहे है। लेकिन सरकार के ऐसे प्रयास से भी विशेष कुछ परिणाम नहीं मिल रहा है, ऐसा कहें तो |अयोग्य नहीं होगा।

महिलाओं की समस्याए घटने के बजाय, हम देख रहे हैं कि वे लगातार बढ़ रही हैं। महिलाओं की छेड़छाड़, उन पर हो रहे अत्याचार, बलात्कार, उसके साथ अवैध संबंध, उनका शोषण, घरेलू हिंसा, बच्चियों को जन्मते ही दूध मे डूबोकर मार डालना, भ्रूण हत्या आदि समस्याए ज्यादा विकराल होती जा रही है। कुछ NGO उपरोक्त समस्याओं को हल करने के लिए अच्छा काम कर रही हैं। पीड़ित महिलाओं के पुनर्वास के लिए भी प्रयास किए जा रहे हैं। हमारे देश के न्यायतंत्र द्वारा इस संबंध में अनेक कानूनी प्रावधान भी कीये गए है। गुन्हेगार को मृत्युदंड तक की सजा दी जाती है। लेकिन इन सभी प्रयासों के बावजूद भी परिस्थिति उत्तरोत्तर बिगड़ती जा रही है| ये हकीकत हमें स्वीकारनी ही पड़ेगी|

दूसरी एक ध्यान खिचनेवाली बात बाहर आई है कि अत्याचार, शोषण, बलात्कार या घरेलू हिंसा के जीतने किस्से हमारे देश में होते हैं, उनमे से ८०% से ज्यादा किस्सों में अधिकतर परिवार के सदस्य, रिश्तेदार या पड़ौसी शामिल होते है | ऐसे परिचित व्यक्ति ही महिलाओं पर अत्याचार या बलात्कार करते है| जो पारिवारिक व्यक्ति वा संबंधी परिवार कि महिलाओ कि सलामती के लिए ज़िम्मेवार होते है, वहीं उनका शोषण करे तो महिलाएं कहा जाएं? रक्षक स्वयं ही भक्षक बन जाए तो महिला कहा जाएं? हर घर में पुलिस रखना तो सरकार के लिए संभव नहीं है |

अगर हम वास्तव में महिलाओं की ऐसी समस्याओं का निराकरण करना चाहते हैं तो हमें समस्या की जड़ तक जाना होगा। समस्याओं की सही जड़ है लोगो की विकृत और बहकी हुई मानसिकता और वासनायुक्त वृत्ति । हमारे पुरुष प्रधान देश में पुरुषों का अहंकार और आधिपत्य भी जिम्मेदार है। दूसरे शब्दों में,

इंसान, अब इंसान न रहकर, हैवान बन गया हैं। आज तो ७०-८० साल की उम्र वाली व्यक्ति पर भी विश्वास नहीं रख सकते है | बाप बेटी के, भाई बहन के बीच के देह संबंध के किस्से भी सुनने में आते है, जो समाज के पतन की पराकाष्ठा है।

इसलिए, समस्या को हल करने के लिए, हमें लोगों की मानसिकताको, लोगो कि वृत्ति को, लोगो के अभिगमो को बदलना पड़ेगा। वृत्ति को दमन करने का मार्ग या कानूनी मार्ग कोई विशेष सुधार नहीं ला सकता है | यह बात को जितनी जल्दी समझा जाए उतना बेहतर होगा। इसके लिए आत्म-जागृति की आवश्यकता है। कामवृत्ति से वासनाग्रस्त हुआ मानव का मन, भले वह स्त्री हो या पुरुष, सदैव बाहर की दुनिया में भटकता रहता है। उसकी आँखें हमेशा बाहर के विलासी दृश्यों की तलाश में रहती हैं। यदि कोई व्यक्ति ऐसी विलासी वृत्तियों का बिना समझ दमन कर नियंत्रण करने का प्रयास करता है तो विशेष कोई सफलता नहीं मिलती। फिर मौका या एकांत मिलते ही पाशवी वृत्तियाँ फिर से जागृत हो जाती है।

इन समस्याओं के समाधान का यदि कोई सही और सरल मार्ग है, तो वह है अध्यात्म विज्ञान की सच्ची समझ द्वारा आत्मजागृति। जब व्यक्ति अध्यात्म विज्ञान के शाश्वत सिद्धांतों की सही समझ प्राप्त कर अंतर दर्शन करता है तब उसकी दृष्टि, वृत्ति और कृति में सहज परिवर्तन आ सकता है और विषय- वासनाओं का धीरे-धीरे समन हो जाता है| आत्मज्ञान के आधार पर व्यक्ति जब आत्मचिंतन और आत्मदर्शन करता है तब उसको अपने में भरी हुई निर्बलता, कमियों और कमजोरियों की महसूसता होती है| उसके बाद वह देहभान से मुक्त होकर आत्मा की स्मृति में स्थित हो जाता है| प्रत्येक व्यक्ति को, पुरुष हो या स्त्री, वह आत्मिक दृष्टि देखनेवाला हो जाता है | इस तरह हम अपने संस्कारों का सकारात्मक परिवर्तन कर, अपने जीवन को मूल्यनिष्ठ और चरित्रवान बनाएंगे तो हम एक श्रेष्ठ समाज की स्थापना कर सकते है। जहाँ हमारी माताए, बहनें, बेटिया सलामत रहेंगी और निर्भयता का अनुभव कर सकेंगी|

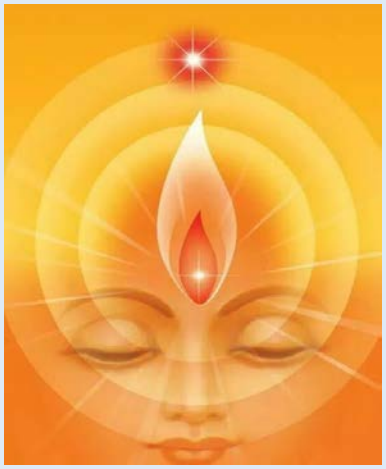

आत्मिक संबंध या व्यवहार ही सच्ची आध्यात्मिकता है, जिसमें व्यक्ति अपने को पवित्र प्रकाश बिंदु आत्मा समझ कर दूसरों को भी उसी स्वरूप में देखता है। इस स्थिति में भौतिक व दैहिक आसक्तियों की कोई गुंजाइश ही नहीं रहती| व्यक्ति का जीवन गुण संपन्न, शक्ति संपन्न एवं मूल्यवान बन जाता है। जीवन प्रेम, दया, सहानुभूति, समानुभूति सहनशीलता जैसी सकारात्मक भावनाओं से भर जाता है। सब के प्रति समत्व और सम्मान की भावना पैदा होती है। उसमें विकृत मानसिकताओं के लिए कोई स्थान ही नहीं बचता है|

विश्व में बहुत ही कम संस्थाएं इस दिशा में काम कर रही है जो आध्यात्मिक ज्ञान की समझ देकर, विशेष

रूप से योग के विज्ञान का प्रशिक्षण देकर लोगो के संस्कारों का परिवर्तन कर रही हो और माहिलाओं प्रति सन्मान का भाव और स्नेह भाव उत्पन्न करती हो।

ऐसी संस्थाओं में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय ध्यानाकर्षित करने वाली वैश्विक संस्था है जो कि महिलाओ के लिए अलौकिक तरीके से कार्य करती है। इस संस्था के साथ संलग्न उसके महिला प्रभाग द्वारा विश्व स्तर पर महिलाओ की समस्याओं के समाधान और महिला सम्मान के लिए प्रामाणिक प्रयास किए जा रहे है, और उसके सुंदर परिणाम भी मिल रहे है| संस्था की ध्यान आकर्षित करने वाली विशेषता यह है की नारी सन्मान और गौरव के लिए इस संस्था का सम्पूर्ण संचालन महिलाओं द्वारा ही हो रहा है । पुरुष भी निस्वार्थ भाव से सहयोग देते है| संस्था को ऐसे बहुमूल्य कार्य के लिए कई आंतरराष्ट्रीय पुरस्कार भी मिले हैं एवं संस्था में दिए जानेवाले आध्यात्मिक शिक्षण व प्रशिक्षण का दायित्व भी बहनों को दिया गया है। आइए हम सब महिलाओं की सुरक्षा और सन्मान के लिए हो रहे आध्यात्मिक जागृति के इस प्रयास में सहयोगी बनें और परिवर्तन का आरंभ स्वयं से ही करें। संस्था का एक ध्यान खिचनेवाला स्लोगन याद रखने लायक है "विश्व परिवर्तन का आधार व्यक्ति परिवर्तन है"

----- 0 ----- 0 ----

ब्र. कु. प्रफुल्लचंद्र

सानडिएगो. यु एस ए

(M) +91 98258 92710